मई - २०१३

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

हुररे.....
खुद ही बनाए
पॉकिट स्टोरी बुक!
पेज नं ९ से १२

छुट्टियों... का... मज़ा!!!

संपादकीय

बालमित्रो,

गर्मी आई, छुट्टी लाई

खूब मज़ा ही मज़ा लाई.....

बात तो सही ही है न! छुट्टियाँ हों तो मज़ा होता ही है, फिर भले ही कड़ी धूप हो या ठिठुरती हुई सर्दी। मज़ा छोड़े वे दूसरे! और उसमें भी अच्छी मज़ेदार कहानियाँ पढ़ने को मिलें तब तो रहा ही क्या बाकी!

हाँ, इस अंक में भी मज़ेदार कहानियाँ हैं। साथ ही साथ मज़ेदार खेल भी हैं। इतना ही नहीं, तुम्हें अच्छा लगे ऐसा बहुत कुछ है इसमें।

तो आओ, छुट्टियों का मज़ा बढ़ानेवाले इस अंक का मज़ा लें, "छुट्टियों का मज़ा।"

- डिम्पल मेहता

छुट्टियों... का... मज़ा!!!

अनुक्रमणिका

१ मीठी यादें...

२ इलाचीकुमार

४ पैसे से व्यक्ति की कीमत अधिक

५ वात्सल्यमूर्ति प्रतिमा

६ दादाजी कहते हैं...

७ जैसी चिंतना करोगे वैसे हो जाओगे

११ फूड कोर्नर

१२ चलो खेलें...

१४ मन पसंद कहानी

१६ दयानंद सरस्वती

१७ किड्स केम्प की झलक

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : २
अखंड क्रमांक : २
मई २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published by :
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by :
Mahavideh Foundation
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at :
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation:
Simandhar City,
Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

मीठी यादें...

एक भाई की बात है। उन्होंने तब नया-नया ज्ञान लिया था। नीरू माँ के प्रति उन्हें अत्यंत भक्ति और खिंचाव रहता था। ज्ञान लिए हुए उन्हें दो-तीन महीने ही हुए होंगे। एक बार उन्हें सपने में पद्मावती माता आईं। साक्षात् पद्मावती माँ। लाल चुनरी ओढ़े हुए और बहुत ही सुंदर। भाई ने माताजी के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। जैसे ही सिर ऊपर उठाया तब माताजी ने उनके सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए कहा, "जा, मैं तेरे ब्रह्मचर्य की जिम्मेदारी लेती हूँ।"

वे भाई तो सुबह उठकर सीधे नीरू माँ के पास गए और उन्हें सपने के बारे में बताया। नीरू माँ सपना सुनकर बहुत ही खुश हुईं। उन्हें आशीर्वाद देते हुए वे बोलीं, "वे बहुत नसीबवाले होते हैं कि जिन्हें देवी-देवता सपने में आते हैं और सपने में आकर ऐसे आशीर्वाद दे जाते हैं।"

थोड़े दिनों के बाद फिर पद्मावती माँ उन्हीं भाई के सपने में आईं। उस सपने में सीमंधरस्वामी भगवान और दादा भगवान का बड़ा फोटो था। उनकी बाँईं तरफ पद्मावती माता लाल चुनरी में और दाँईं तरफ नीरू माँ बैठी थीं। पद्मावती माता के पैर छूकर उन भाई ने पूछा, "माँ, आप इतने दिनों से दिखीं क्यों नहीं? कहाँ चली गईं थीं।" ऐसा दो-तीन बार पूछा, तब माँ ने जबाब देते हुए कहा, "मैं तो तेरे पास ही हूँ। क्यों ऐसा कहता है? तेरे नज़दीक ही हूँ।" भाई को कुछ समझ में नहीं आया तो फिर प्रश्न पूछा कि, "माँ, आप कहाँ बिराजती हैं?"

तब पद्मावती माता मुस्कुराते हुए बोलीं, "तेरे साथ ये नीरू माँ हैं न, इन नीरू माँ में ही हमेशा के लिए मेरा निवास हो गया है अब।"

यह सुनकर उन भाई को आनंद-आनंद हो गया। माँ के चरणों में सिर रखकर पैर छुए और सपना पूरा हो गया।

उसके बाद उन्हें निरंतर नीरू माँ में पद्मावती माता ही दिखती रहतीं, उन्हें नीरू माँ के प्रति गज़ब की भक्ति शुरू हो गई और नीरू माँ के लिए बहुत ही अहो, अहो भाव रहने लगा।

इलाचीकुमार

इलावर्धन के एक नगर में जीतशत्रु राजा राज्य करते थे। उस राज्य में धनदत्त नामक सेठ रहते थे। उनका पुत्र इलाचीकुमार कलाकार, तेजस्वी और रूपवान था। पुत्र बड़ा हुआ। एक दिन वह रास्ते में नटनी का (अलग-अलग प्रकार के नृत्य करके जीवन निर्वाह करनेवाली जाति) नृत्य देखने खड़ा रहा। नृत्य से ज्यादा उसे नटनी पसंद आ गई। उसके होश उड़ गए। उस नटनी को पाने की उसे इच्छा हुई, उसके लिए वह दीवाना हो गया। उसके पिता ने उसे बहुत समझाया, लेकिन वह नहीं माना और नटों की टोली में चला गया।

कुछ समय बाद इलाची ने नटी के पिता से नटी के साथ शादी के बारे में बात की। पिता ने कहा कि, जो कोई इस कला को सीखकर राजा को खुश करके, उनसे इनाम पाएगा, उसी के साथ इस कन्या की शादी होगी यह हमारे कुल का रिवाज़ है। तुम वैसा करोगे, तो कन्या तुम्हें मिलेगी।

इलाची वहाँ रहकर नटकला सीखने लगा। लोगों को खुश करना उसे साधारण सी बात लगी इसिलए उसने राजा को खुश करने की ठान ली।

अथक प्रयास के बाद आखिर वह दिन आ ही गया। नगर के विशाल चौक में खेल का आयोजन हुआ। राजा और प्रजा देखने के लिए इकट्ठा हुए। इलाचीकुमार तरह-तरह के नृत्य करने लगा। खेल देखकर प्रजा मुग्ध हो गई, किन्तु जब तक राजा इनाम नहीं दे, तब तक सब बेकार! राजा को खुश करने के लिए इलाची ने वंशनृत्य करना शुरू किया, नटकला का यह सबसे उत्तम नृत्य माना जाता है। नटनी ढोलक बजाती और इलाची नाचता। देखनेवालों ने दाँतो तले ऊँगली दबा दीं।

राजा नटनी की सुंदरता पर मोहित हो गए। इलाची का नाच देखने के बजाय वे नटनी को देखने में मस्त हो गए। वह नट-कन्या राजा की आँखों में बस गई। राजा ने सोचा कि, यदि यह नट, बाँस पर से गिर जाए और मर जाए तो मैं इस कन्या को पा सकता हूँ, इसलिए वे बैठे रहे, राजा इनाम नहीं दे रहे थे और नट इनाम की आशा में नाचे जा रहा था। तीन-तीन बार वह बाँस पर चढ़ा और तन तोड़कर अलग-अलग खेल बताए, लेकिन राजा पर कुछ असर नहीं हुआ। नट राजा के मन की बात समझ गया।

बाँस पर खड़े-खड़े उसने दूर नज़र की। एक अद्‌भुत दृश्य उसे दिखाई दिया। एक घर के आँगन में मुनि महाराज गोचरी वोहर (भोजन ले) रहे थे। एक सुंदर स्त्री उन्हें वहोरा रही थी। नीची नज़र करके मुनि महाराज वोहर रहे थे। स्त्री के हृदय में भक्तिभाव था और मुनि के अंतर में वैराग्य। यह देखते ही इलाची वहीं का वहीं रुक गया। बेहोश वृत्तियों को जैसे बोध मिल गया हो। उसे लगा, इसके बजाय उस मार्ग में कितनी शांति है। कहाँ एक स्त्री को पाने के लिए इतनी चंचलता और कहाँ यह आत्मा की शांत दशा? इस ध्यान से, इस विचार से इलाची अंतरमुख हो गया (आत्मा संबंधी विचार आने लगे)। आत्ममार्ग में वह तेज़ी से आगे बढ़ने लगा। श्रेणियाँ चढ़ने लगा (स्थिति उत्तम होना)। कर्म का क्षय हुआ और वहीं के वहीं उसे केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

दुंदभियाँ बज़ने लगीं। देवताओं ने फूल बरसाए। केवलज्ञानी इलाचीकुमार ने सभी को बोध दिया। राजा-नट-नटी आदि सभी को बोध मिला। दीक्षा प्राप्त करके वे मोक्ष गए।

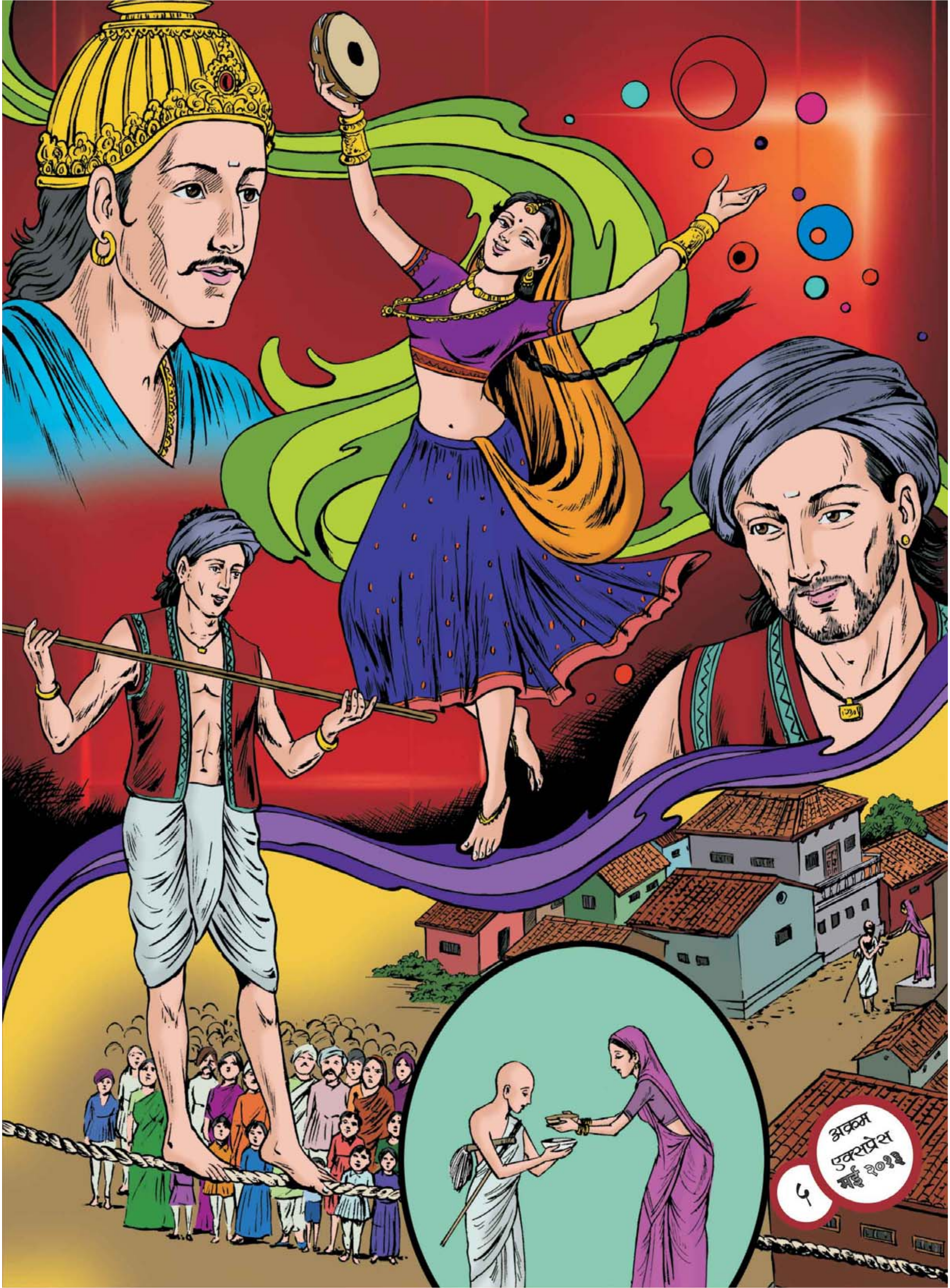

पैसे से व्यक्ति की कीमत अधिक

श्रीमद् मुंबई में हीरे-मोती का व्यापार करते थे। सभी व्यापारियों के बीच वे एक विश्वसनीय व्यापारी के तौर पर प्रसिद्ध थे।

एक अरबी व्यापारी अपने छोटे भाई के साथ मुंबई में मोती की दलाली का व्यापार करता था। एक दिन छोटे भाई को विचार आया कि, मैं भी बड़े भाई की तरह मोती का व्यापार करूँ। इसलिए जो माल परदेश से आया था उसे लेकर वह बाज़ार गया।

वहाँ एक दलाल से उसने कहा, "कोई अच्छे ईमानदार सेठ के बारे में मुझे बताओ।" दलाल उसे श्रीमद् की दुकान में ले गया। श्रीमद् ने सारा माल अच्छी तरह परख लिया और उसकी उचित कीमत उसे दे दी। वह छोटा भाई पैसे लेकर खुशी-खुशी अपने घर चला गया। बड़े भाई घर आए तब उसने अपने सौदे की बात उन्हें बताई। बड़े भाई ने देखा कि, छोटे भाई ने सौदा करने में धोखा नहीं खाया। श्रीमद् ने उसे सही कीमत दी थी। परंतु बात यह थी कि, जिस आदमी का यह माल था, उसकी उसी दिन चिट्ठी आई थी कि उसमें उसने खास कीमत के बारे में लिखा था कि, इतनी कीमत मिले बिना उस माल को न बेचें। छोटा भाई उस कीमत से बहुत कम कीमत में उस माल को श्रीमद् को बेच आया था। अब क्या करे? यह तो ज़बरदस्त नुकसान हो गया! वह चिढ़कर बोला, "अरे, यह तूने क्या किया? मेरा तो दिवाला ही निकाल दिया!"

वह व्यापारी बावला होकर श्रीमद् के पास दौड़ गया। उसने श्रीमद् को उस आदमी के चिट्ठी को पढ़ाते हुए कहा, "साहब, मुझ पर रहम करो। वर्ना मैं गरीब आदमी बरबाद हो जाऊँगा!" पास ही में जैसे का वैसा पड़ा हुआ माल दिखाकर श्रीमद् ने कहा, "भाई, आपका माल यह रहा। आप खुशी से ले जाओ।"

ऐसा कहकर श्रीमद् ने उस अरबी भाई को उसका माल वापस दे दिया और पैसे ले लिए। जैसे कोई सौदा किया ही नहीं हो, वैसे। हाथ में आया हुआ फायदा जाने दिया। वह अरबी भाई श्रीमद् को खुदा के बंदे की तरह मानने लगा।

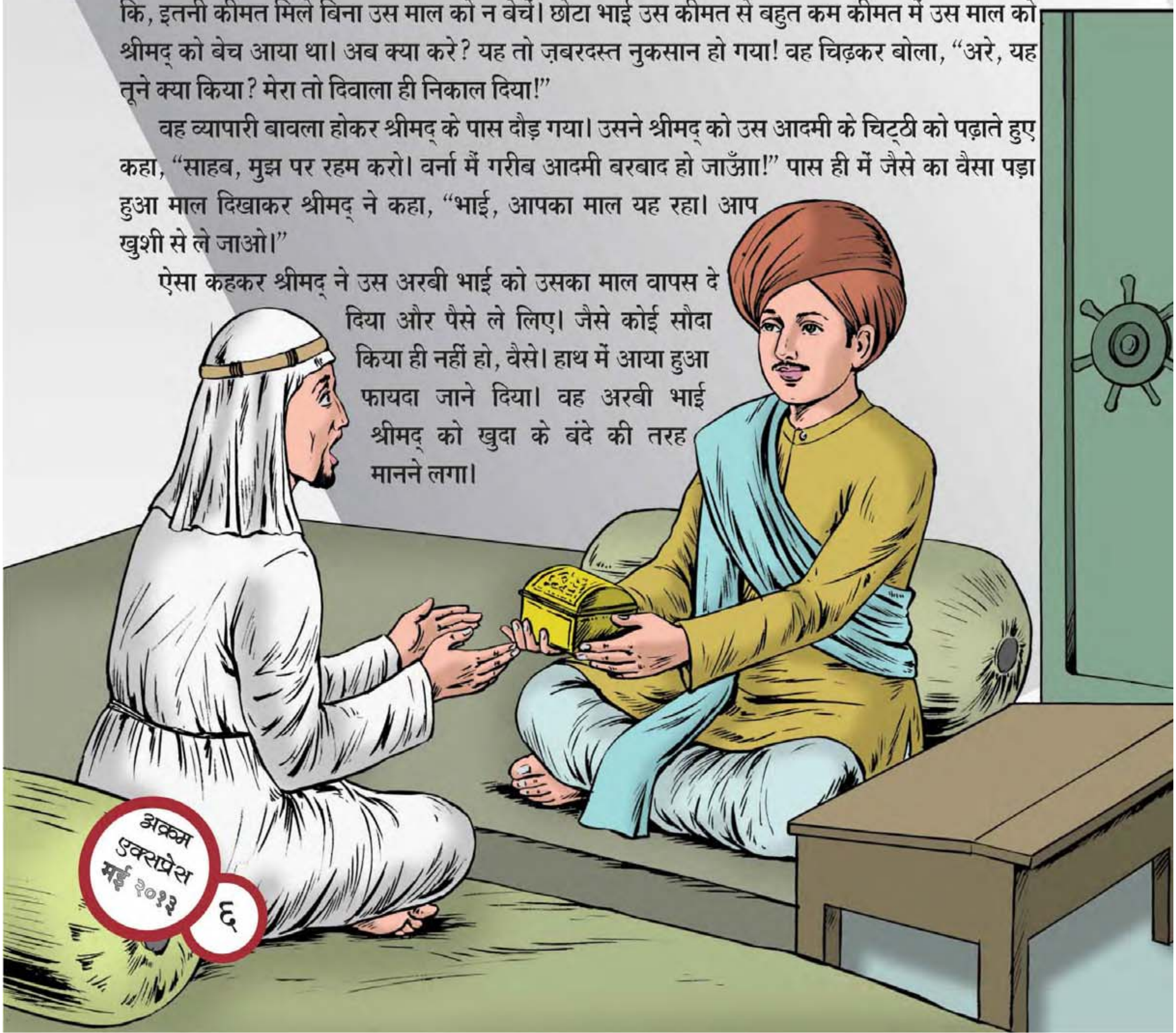

वात्सल्यमूर्ति प्रतिमा

स्वामीनारायण संप्रदाय के प्रसिद्ध संतो में माने जानेवाले मुक्तानंदजी। उनके बहुत से बाल शिष्य थे। बाल शिष्यों सहित वे रोज़ दिन में एक ही समय भोजन करते थे। एकबार वे अपने बाल शिष्यों के साथ किसी गाँव में गए। वहाँ मंदिर में रुके।

बाल शिष्यों को मंदिर में छोड़कर स्वामीजी किसी भक्त के वहाँ कीर्तन करने गए। वैसे तो बाल शिष्य भजन में बैठते थे इसीलिए सुबह भूख लगने पर भी समय निकल जाता था, लेकिन आज मंदिर में एकदम अकेले हो जाने पर बाल संन्यासियों को ज़ोर की भूख लगी। एक ही समय भोजन करने का, व्रत का पालन करना आज मुश्किल हो गया। उन्होंने मंदिर में पड़ी हुई बासी रोटियाँ खानी शुरू कर दीं।

थोड़ा बहुत खाया तभी स्वामीजी आ गए। एक ही समय भोजन करने का व्रत भंग करके बाल साधुओं को भोजन करते उन्होंने देखा। बाल साधु भी स्वामीजी को देखकर बहुत घबरा गए। स्वामीजी अब डाँटेंगे ऐसा सोचकर शिष्य काँपने लगे। लेकिन स्वामीजी तो वात्सल्यमूर्ति थे। जैसे कुछ देखा ही नहीं ऐसे कहने लगे कि "मुझे आज बहुत भूख लगी है। आज मैं अपना व्रत नहीं रख सकता।" ऐसा कहकर बाल संन्यासियों के साथ वे भी खाने बैठ गए।

बाल संन्यासियों के हृदय में शांति हुई। इस तरह स्वामीजी ने उन्हें अपने प्रेम में सराबोर कर दिया।

दादाजी कहते हैं....

जिनका निदिध्यासन करो....

प्रश्नकर्ता : दादा निरंतर याद रहते हैं, वह क्या है?

दादाश्री : उसे निदिध्यासन कहते हैं, जिनका निदिध्यासन करें उनकी तरह बनते हैं और उनकी सभी शक्तियाँ हमें प्राप्त होतीं हैं। दादा का निदिध्यासन करें तो उनमें जो गुण हैं, वे अपने में उत्पन्न होते हैं। हमारा निदिध्यासन वही भक्ति है। ज्ञानी का निदिध्यासन अंतिम भक्ति है।

प्रश्नकर्ता : दादा, आपके स्मरण और निदिध्यासन में कुछ अंतर है क्या?

दादाश्री : निदिध्यासन तो मुखारविंद के साथ होता हैं (चेहरा दिखता रहे) और स्मरण मुखारविंद के बिना रह सकता है। मुखारविंद के साथ का निदिध्यासन तो काम निकाल देता है। "दादा" "एक्ज़ेक्ट" नहीं दिखें तो हर्ज नहीं। आँखें नहीं दिखें तो भी हर्ज नहीं, लेकिन मूर्ति दिखनी चाहिए। जिसका निदिध्यासन करते हैं उसकी तरह बनते हैं। दादा "एक्ज़ेक्ट" दिखें तो हम भी उसी स्वरूप बनेंगे, दादा का स्मरण रहे तो भी अच्छा और निदिध्यासन रहे वह भी अच्छा।

निदिध्यासन मतलब क्या, कि किसी को देखकर लगे कि "यह अच्छा दिखता है" यह विचार किया और जितनी देर रहा, उतनी देर निदिध्यासन हुआ कहलाएगा। विचार किया कि तुरंत निदिध्यासन होता है और फिर वह भी वैसा ही बन जाता है।

यदि कोई ग्रेजुएट व्यक्ति हो, लेकिन यदि वह खेत में बैल चलाए तो वह बैल जैसा बन जाएगा। जिसके संग में आया और जिसका निदिध्यासन रहे, उस रूप बन जाता है।

दादा का निदिध्यासन निरंतर रहना चाहिए। आँखें बंद करते ही दादा दिखें तो कुसंग छूएगा ही नहीं न!

तुम्हारी छोटी सी स्टोरी बुक किस तरह बनाओगे?

१. पिन का पेज निकाल लो, जहाँ कैंची दिखाई है, उस लाइन पर कैंची से कागज़ काटो।

२. बाद में बताए अनुसार पेज नं. देखकर एक के नीचे एक लगाओ।

३. लगाने के बाद पेज को बीच में से मोड़कर, वहाँ स्टैपलर पिन लगा दो।

आपकी पॉकिट स्टोरी बुक तैयार!

जैसी चिंतना करोगे वैसे हो जाओगे

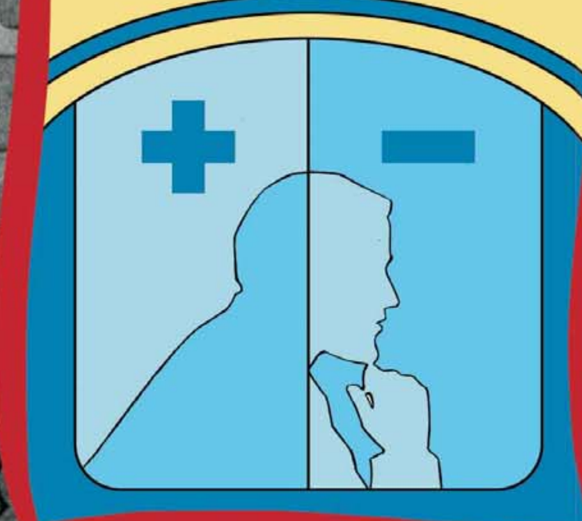

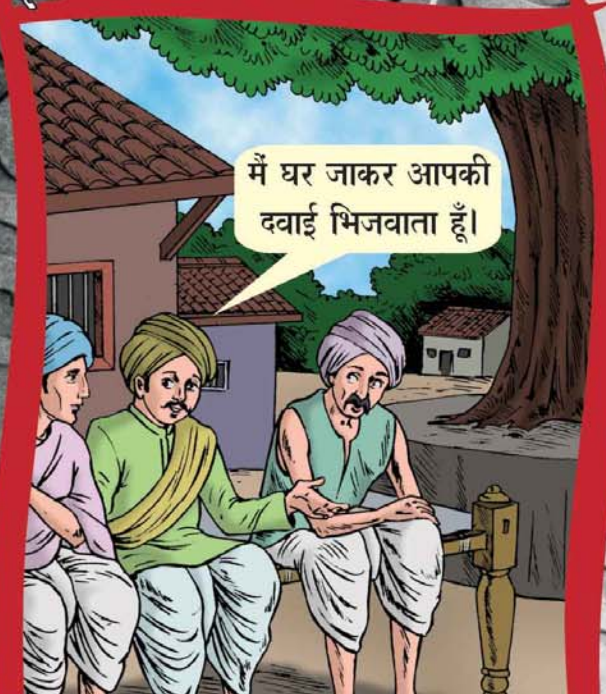

२

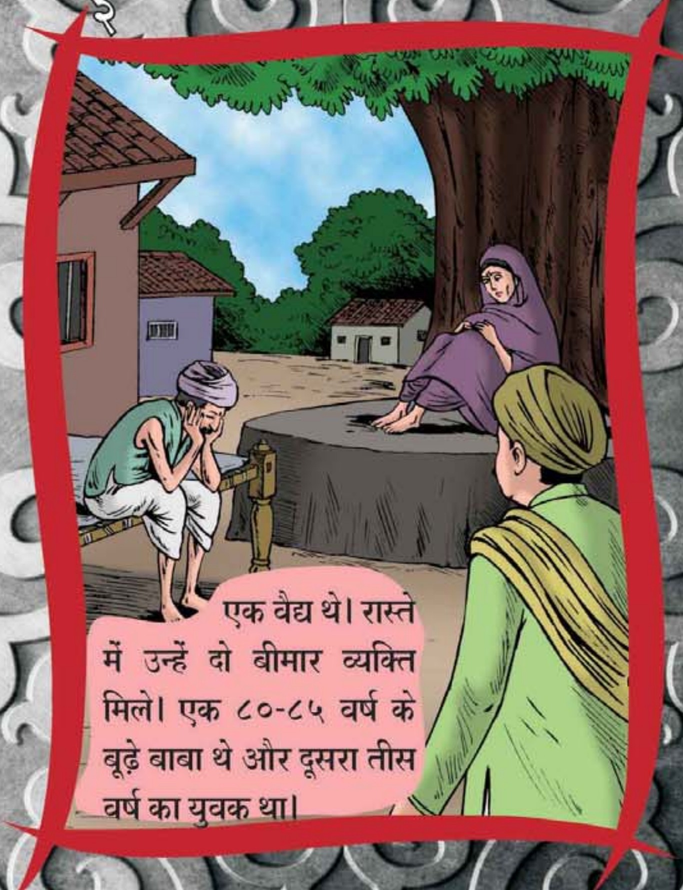
एक वैद्य थे। रास्ते में उन्हें दो बीमार व्यक्ति मिले। एक ८०-८५ वर्ष के बूढ़े बाबा थे और दूसरा तीस वर्ष का युवक था।

१५

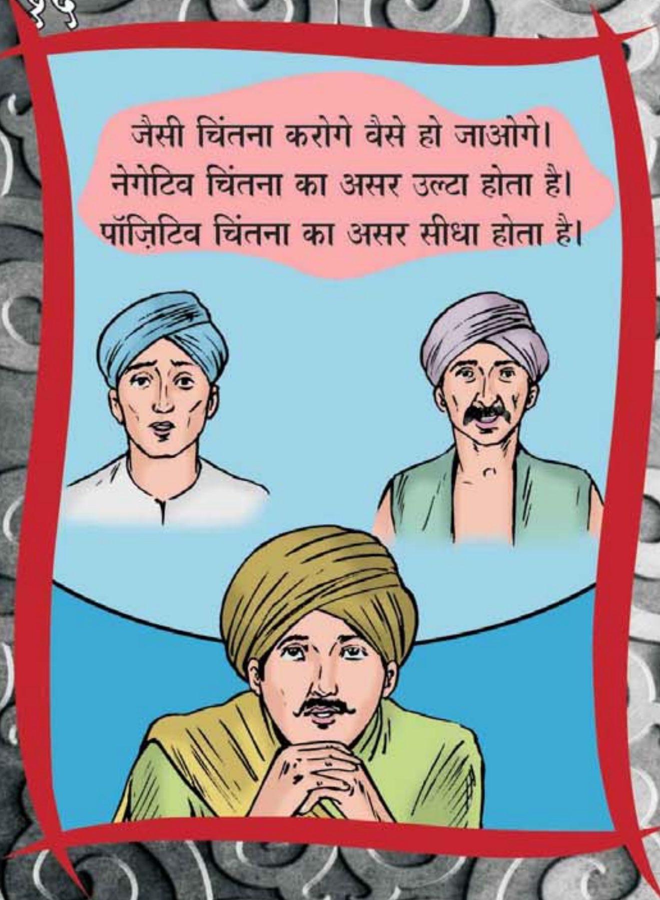
जैसी चिंतना करोगे वैसे हो जाओगे।
नेगेटिव चिंतना का असर उल्टा होता है।
पॉज़िटिव चिंतना का असर सीधा होता है।

४

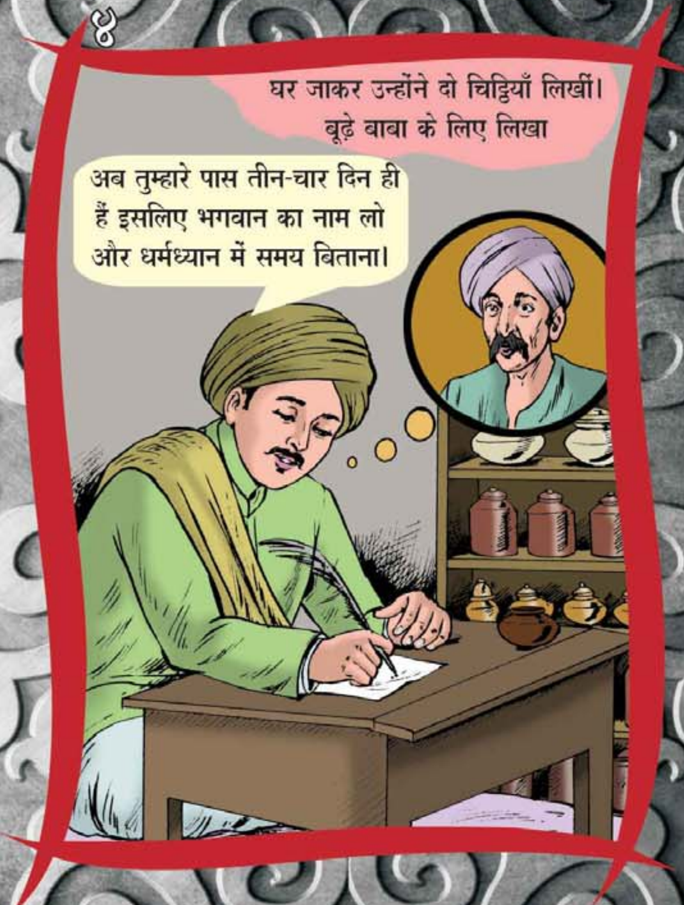
घर जाकर उन्होंने दो चिट्ठियाँ लिखीं। बूढ़े बाबा के लिए लिखा
अब तुम्हारे पास तीन-चार दिन ही हैं इसलिए भगवान का नाम लो और धर्मध्यान में समय बिताना।

१३

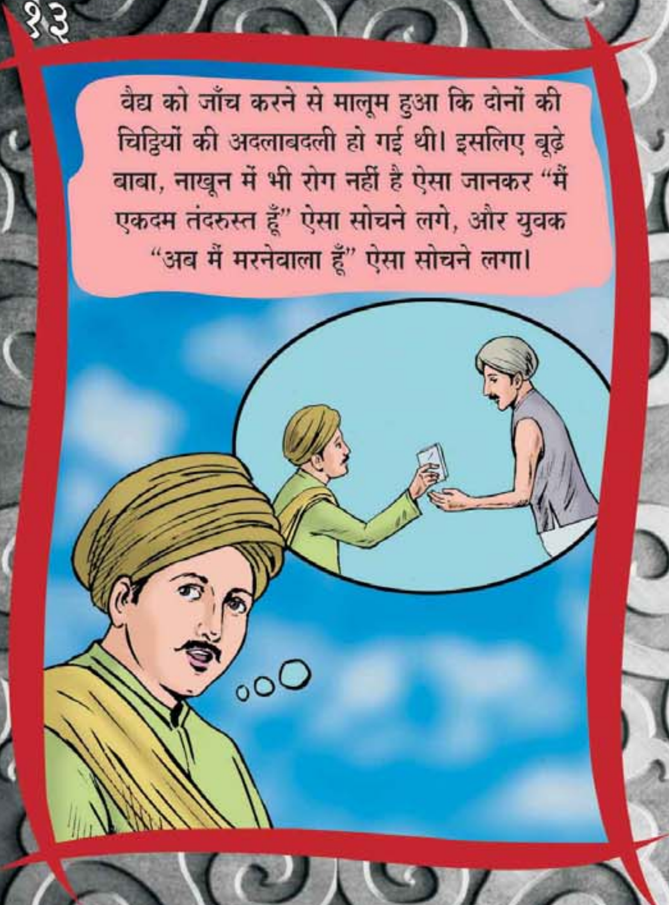
वैद्य को जाँच करने से मालूम हुआ कि दोनों की चिट्ठियों की अदलाबदली हो गई थी। इसलिए बूढ़े बाबा, नाखून में भी रोग नहीं है ऐसा जानकर "मैं एकदम तंदरुस्त हूँ" ऐसा सोचने लगे, और युवक "अब मैं मरनेवाला हूँ" ऐसा सोचने लगा।

१२

फिर वैद्य युवक के पास गए। युवक तो बेचारा मरने जैसा हो गया था।
अरे क्या हालत हो गई तुम्हारी?
आपकी चिट्ठी पढ़ी तब से मेरी ऐसी हालत हो गई है।

५

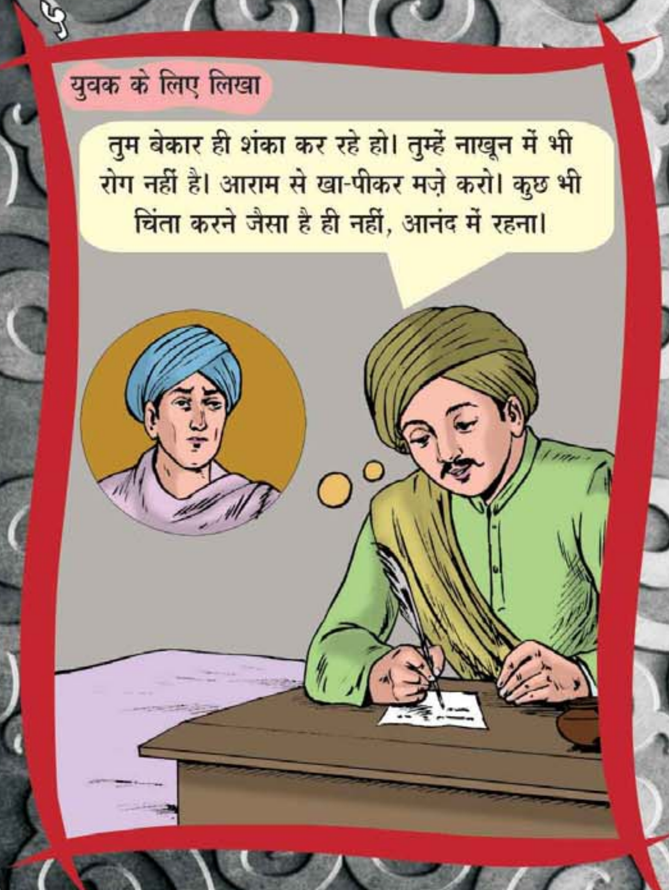
युवक के लिए लिखा
तुम बेकार ही शंका कर रहे हो। तुम्हें नाखून में भी रोग नहीं है। आराम से खा-पीकर मज़े करो। कुछ भी चिंता करने जैसा है ही नहीं, आनंद में रहना।

१०

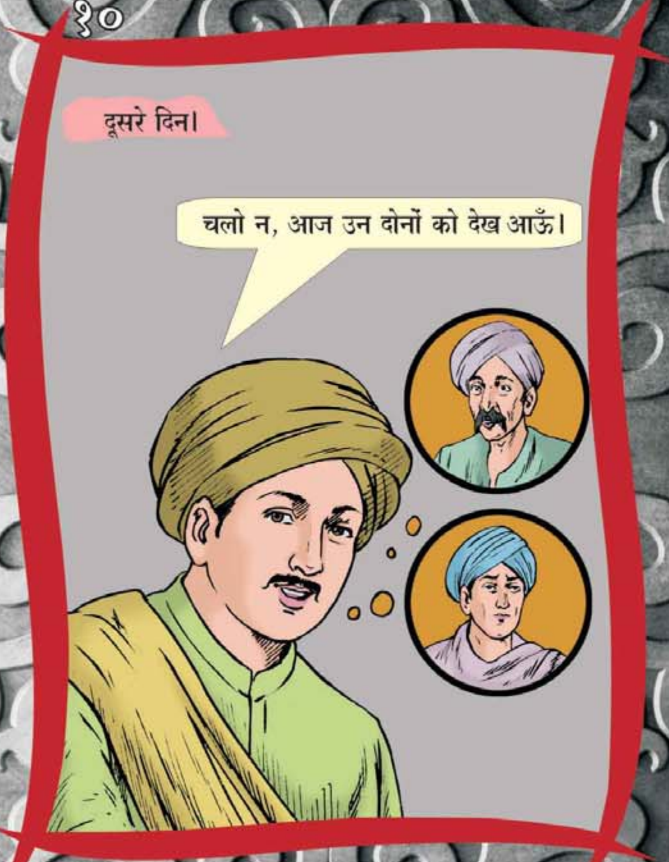
दूसरे दिन।
चलो न, आज उन दोनों को देख आऊँ।

६

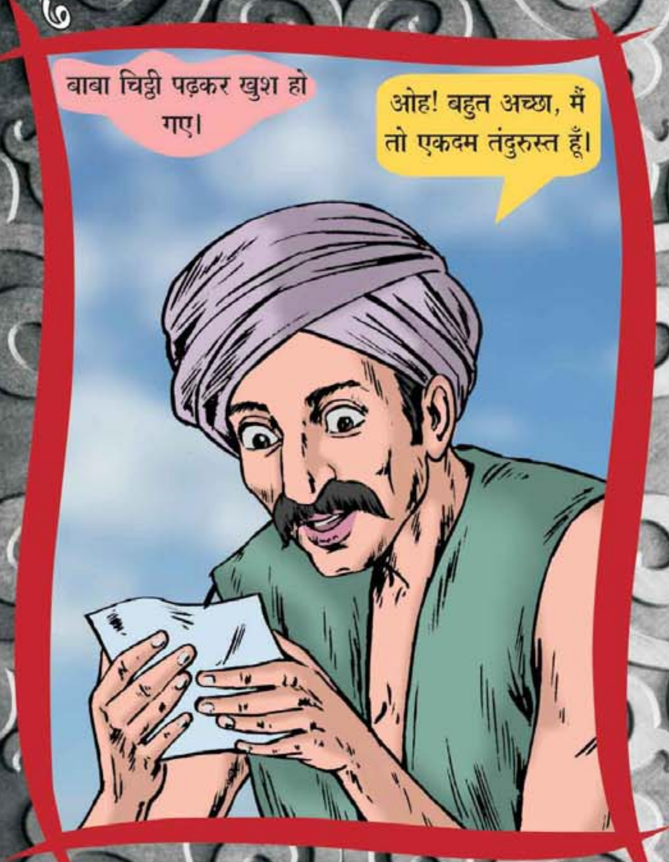
बाबा चिट्ठी पढ़कर खुश हो गए।
ओह! बहुत अच्छा, मैं तो एकदम तंदुरुस्त हूँ।

६

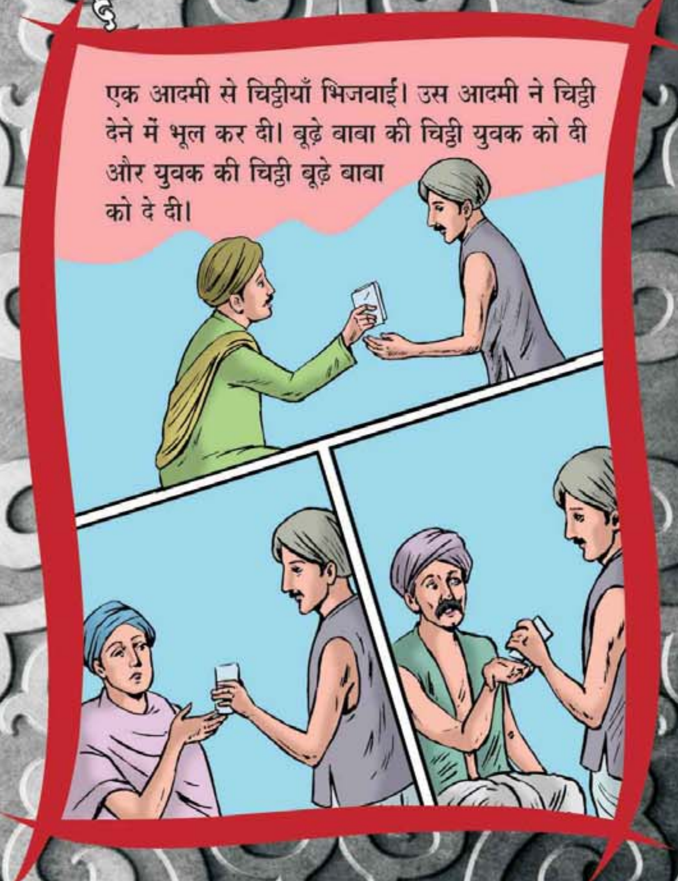
एक आदमी से चिट्ठीयाँ भिजवाई। उस आदमी ने चिट्ठी देने में भूल कर दी। बूढ़े बाबा की चिट्ठी युवक को दी और युवक की चिट्ठी बूढ़े बाबा को दे दी।

११

देखा तो बूढ़े बाबा आराम से चाय और गाँठिया खा रहे थे।
बाबा, आप तो बहुत आनंद में दिख रहे हो। क्या बात है?
जब से तुम्हारी चिट्ठी पढ़ी है तब से मैं आनंद में रहने लगा हूँ और तबियत भी अच्छी रहने लगी है। अब तो मैं घूमता, फिरता, खाता, पीता, मज़े करता हूँ।

८

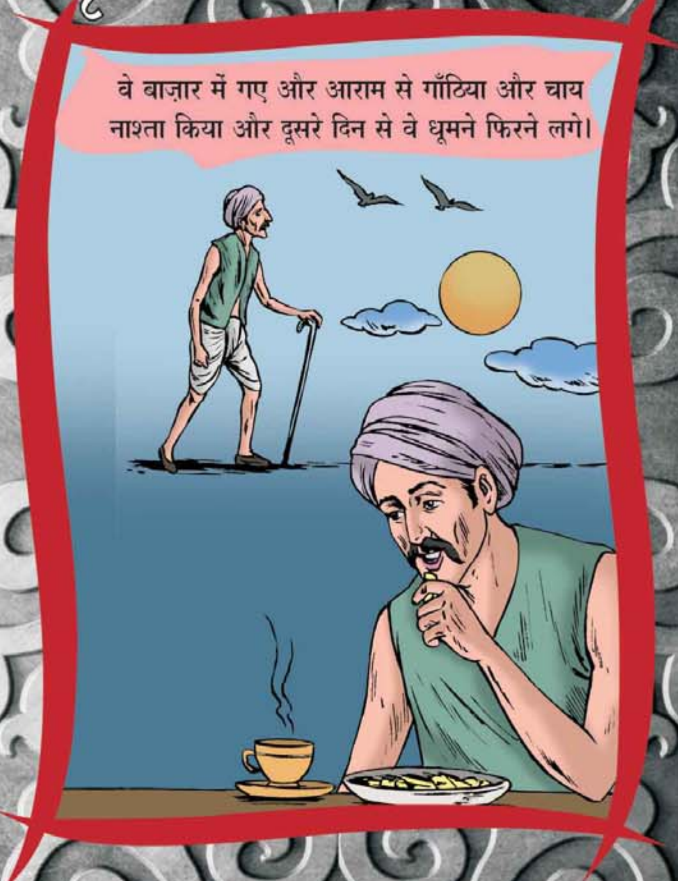
वे बाज़ार में गए और आराम से गाँठिया और चाय नाश्ता किया और दूसरे दिन से वे धूमने फिरने लगे।

९

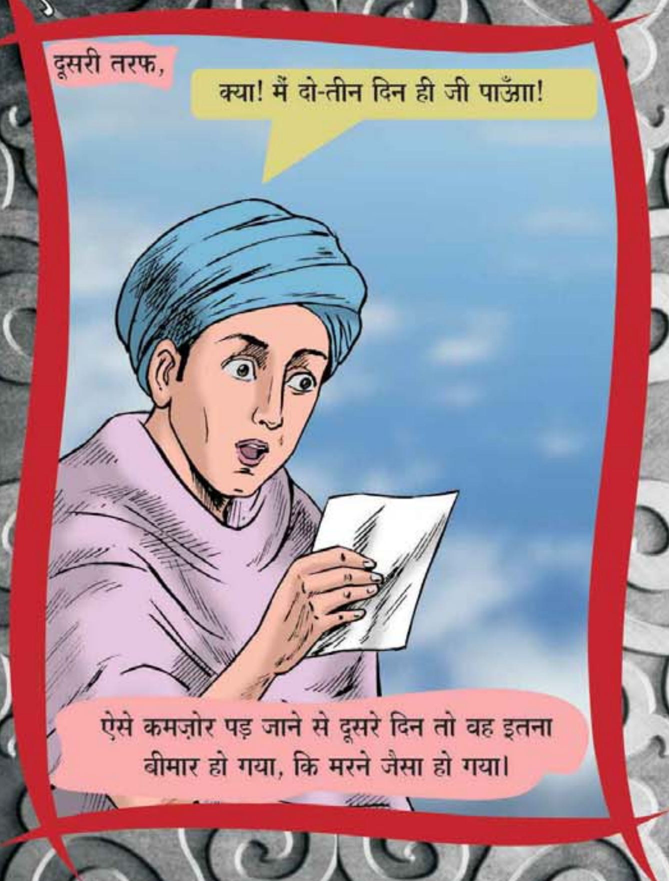
दूसरी तरफ,
क्या! मैं दो-तीन दिन ही जी पाऊँगा!
ऐसे कमज़ोर पड़ जाने से दूसरे दिन तो वह इतना बीमार हो गया, कि मरने जैसा हो गया।

फूड कॉर्नर

जैसा आहार वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी

प्रश्नकर्ता : बुद्धि और आहार का कुछ संबंध है क्या?

दादाश्री : आहार, पानी और हवा सभी का बुद्धि पर असर होता है। जैसा आहार वैसा मन और जैसा पानी वैसी वाणी। जैसा अन्न खाओगे वैसा मन बनेगा। इसलिए अन्न साफ सुथरा खाना चाहिए, तो मन अच्छा रहेगा। मांसाहार एक महीने, दो महीने किया तो दिमाग, मन शिथिल हो जाते हैं। अच्छे विचार आने बंद हो जाते हैं और शाकाहारी लोगों को सभी तरह के विचार आ सकते हैं। सभी आहार का असर होता है।

बाहर के आहार का असर

दादाश्री : शुद्ध आहार करने से अपने अंदर शुद्धता उत्पन्न होती है। बाहर का जो आहार होता है, उसमें बनानेवाले के परमाणु काम करते हैं। जैसे कि बनानेवाले के मन में किसी को परेशान करने के, बैर लेने के ऐसे हिंसक भाव चलते हों और वह आहार हम करें तो अपने मन पर उन हिंसक भावों का असर पड़ता है। अपनी वृत्तियाँ हिंसा की तरफ जाती हैं। इसलिए होटल का नहीं खाना चाहिए। बहुत भूख लगी हो तो बाहर कहीं थोड़ा दूध ले लेना।

प्रश्नकर्ता : यानी कोई क्रोधी बहन हों, उसकी बनाई रोटी हम खाएँ तो क्या होगा?

दादाश्री : वह परमाणु असर करेंगे न। वह भी हानिकारक है।

असर प्रसाद के परमाणुओं की

इसलिए यहाँ सत्संग में नाश्ता करवाते हैं। यह नाश्ता इस तरह बनता है कि जिसके पेट में इसके परमाणु अंदर जाएँगे न, उस मनुष्य के परमाणु में बदलाव आएगा। इसीलिए तो नाश्ता दिया जाता है। बाकी यह पेट भरने के लिए नहीं है या स्वाद के लिए नहीं है। ऐसे वैसे मोजशौक यहाँ नहीं होते। यह नाश्ता पेट में जाएगा न, तुम्हारे परमाणुओं में बदलाव आएगा क्योंकि, किसी भी तरह, लोगों का कल्याण हो, इस भाव से यह बनाया गया है इसलिए यह परमाणु चेन्ज कर देगा। इसलिए यहाँ का प्रसाद ज़रूर लेना।

चलो खेलें....

१

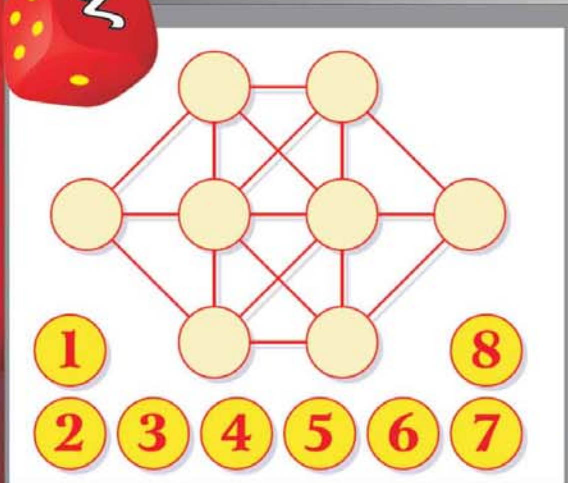

यहाँ दी गई आकृति में १ से ८ नंबर सेट करने हैं। एक वर्तुल में एक नंबर रखना होगा, उसे इस तरह रखना है ताकि वह एक दूसरे के आगे-पीछे नही रहने चाहिए। (जैसे कि १ और २, ३ और ४, ५ और ६.. आदि) और यह नंबर एक दूसरे से सीधी लाइन द्वारा जुड़े हुए वर्तुल में रखने हैं।

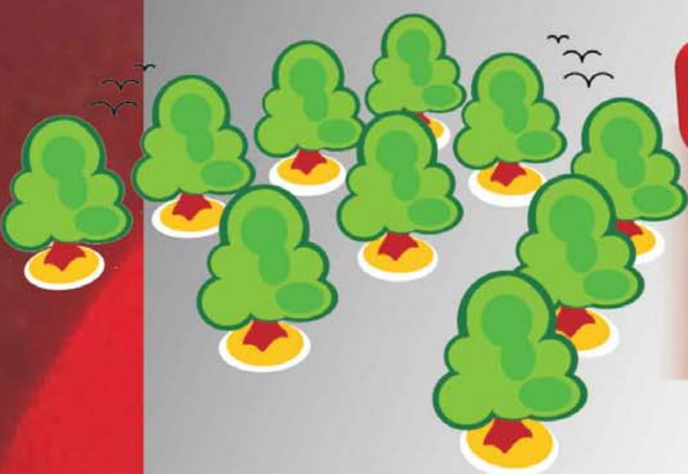

२

पास में दिए गए दस पेड़ को पाँच सीधी लाइन में इस तरह सेट करो कि हर एक लाइन में ४ पेड़ आए। लाइन आड़ी, खड़ी या टेढ़ी हो सकती है।

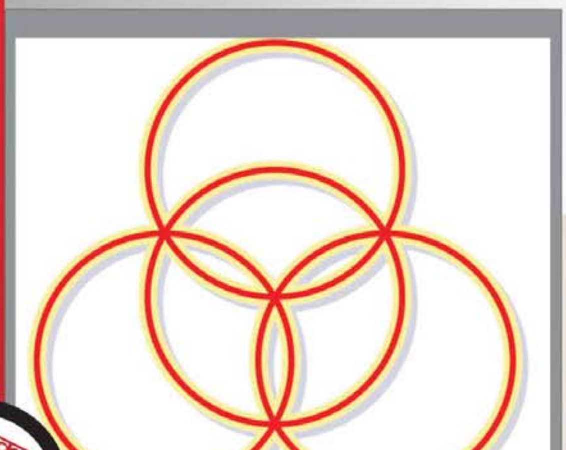

३

आकृति में बताए गए चार वर्तुल को पेन्सिल उठाए बिना और एक लाइन पर दूसरी लाइन नही बना सकते, इस तरह से एक सीधी लाइन बनाना है।

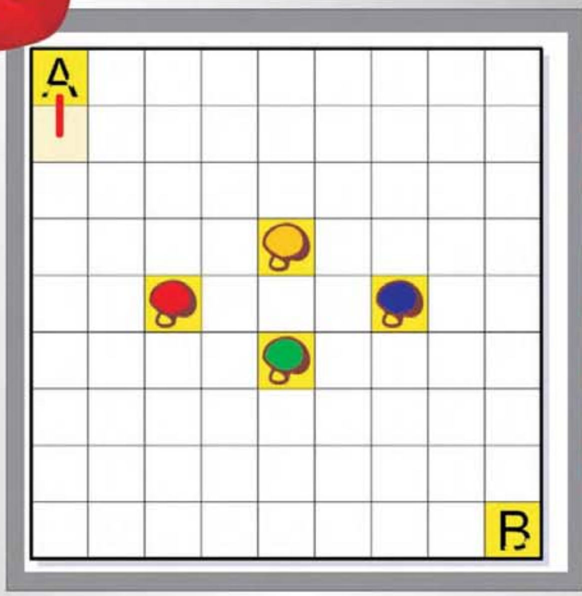

यहाँ दिए गए चौरस में तुम्हें **A** से **B** तक जाना है। ध्यान में रखना है कि हर एक छोटे चौरस में से गुज़रना है। सिर्फ सीधी या आड़ी लाइन से ही गुज़रना होगा, टेढ़ी लाइन से नहीं। छोटे चौरस में जो मशरूम दिए हैं, वे सभी चौरस छोड़ देने हैं। तो चलो अब **A** से शुरू करें...

यहाँ दिए गए तीन पांसे पर तीन नंबर दिए है। तीनों को लाइन में इस तरह रखो कि जिससे एक ऐसा नंबर बने कि जो ७ से भाग सके।

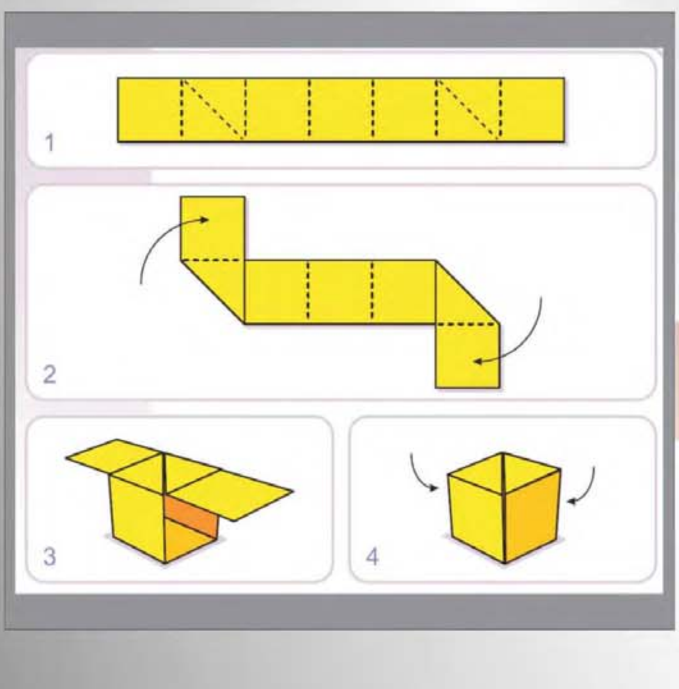

चलो पेपर का क्यूब बनाना सिखे।

मन पसंद

हेलो दीपकभाई, जय सच्चिदानंद।
मैं तुम्हें याद हूँ? कहाँ खो गया था? कितने दिन बाद दिखा?
मैं बेबी एम.एच.टी बनकर वापस आया हूँ।
बहुत अच्छा।
देखो! दीपकदादा को मैं याद हूँ।

क हा नी

आओ, तुम्हें चोकलेट दूँ।
रुक, पहले की तरह वापस कहाँ भाग रहे हो?
विधि कर लो। फिर जाओ।
अब ज़ोरदार पुरुषार्थ करना जिससे वापस न आना पड़े।

दयानंद सरस्वती

महर्षि दयानंद अनूप शहर में रूके हुए थे। उन दिनों वहाँ सैयद मोहम्मद नामक एक अधिकारी थे। वे स्वामीजी के सत्संग से प्रभावित होकर उनकी भक्ति में लग गए थे।

एक दिन एक ब्राह्मण स्वामीजी के पास आया और नमस्कार करके उन्हें एक पान दिया और खाने के लिए विनती की। महर्षि ने सहज स्वभाव से पान मुँह में रख लिया, परंतु उसके रस का स्वाद लेते ही वे समझ गए कि इसमें ज़हर मिलाया है। उन्होंने ब्राह्मण से तो कुछ नहीं कहा, लेकिन तुरंत ही ज़हर का असर नष्ट करनेवाली कुछ योग क्रिया करने गंगा किनारे चले गए। क्रिया पूरी करके फिर से आसन पर आकर बैठ गए।

लेकिन पाप किसी का छिपा है? अधिकारी साहब को इसकी जानकारी मिली। महर्षि के प्रति सम्मान होने के कारण उन्होंने उस ब्राह्मण को दंड देने के लिए सिपाहियों को उसे पकड़ने के लिए भेजा और उसे कैदखाने में बंद कर दिया और फिर महर्षि के दर्शन के लिए गए।

महर्षि को इस बात का पता चला। अधिकारी जब उनके पास आए तब महर्षि ने हमेशा की तरह ही सामान्य व्यवहार किया। इससे अधिकारी को बहुत ही आश्चर्य हुआ और वे सोचने लगे कि मुझे आशीर्वाद देने की जगह मेरे साथ महर्षि ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं।

अधिकारी ने बड़ी ही विनम्रता से कारण पूछा, तब महर्षि ने कहा, "मैंने सुना है कि तुमने पान में विष देनेवाले व्यक्ति को कैदखाने में बंद कर दिया है, मैं इससे सहमत नहीं हूँ।"

अधिकारी ने आश्चर्य से पूछा, "लेकिन क्यों?"

महर्षि ने बड़े ही गंभीर शब्दों में कहा, "भाई सुनो! मैं इस संसार में मनुष्यों को बंधन देने नहीं आया, परंतु बंधनों से मुक्त करवाने आया हूँ। यदि दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता तो हमें अपनी श्रेष्ठता भी नहीं छोड़नी चाहिए।"

ये शब्द सुनकर अधिकारी का सिर महर्षि के चरणों में झुक गया। उन्होंने ऐसे क्षमावान और शत्रु के भी शुभचिंतक व्यक्ति को जीवन में नहीं देखा था। तत्काल ही वहाँ से जाकर उन्होंने ब्राह्मण को मुक्त कर दिया।

ब्राह्मण को जब पूरी घटना के बारे में पता चला तब वह हृदय से खूब पश्चाताप करने लगा और तुरंत ही महर्षि से क्षमा माँगी।

महर्षि ने खूब प्रेम से कहा, "मेरे हृदय में तुम्हारे प्रति कोई अभाव नहीं हैं। जा, परमात्मा तुम्हें सद्‌बुद्धि दें।"

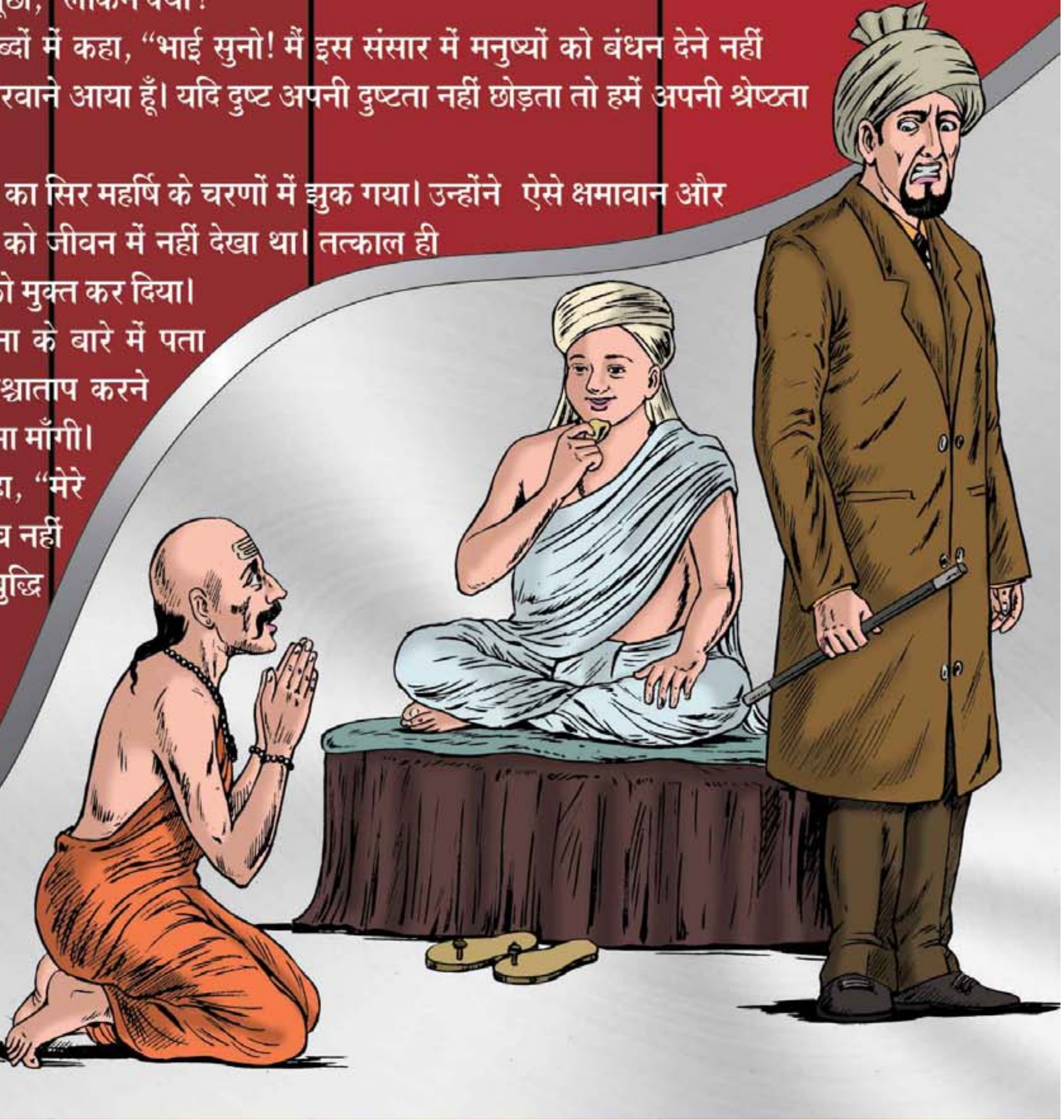

पहेलियों के जवाब

१

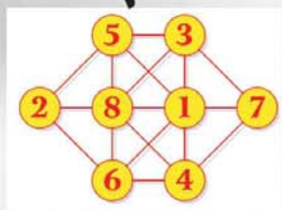

२

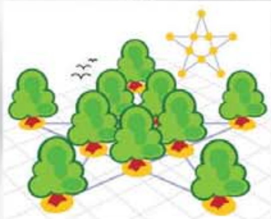

३

४

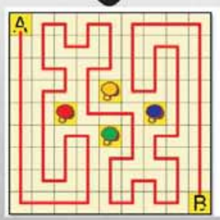

५

स्वामी प्रक्षाल द्वारा बच्चों ने की अद्‌भुत भक्ति...

"एडजस्ट एवरीव्हेर" सेशन की शुरूआत, अवरोधक प्रवेश द्वार से...

आरती दौरान बच्चें भक्ति में लीन...

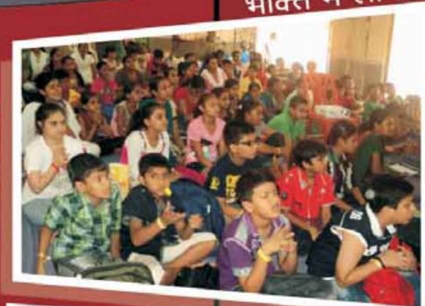

वीतराग भगवान के लिए हार...

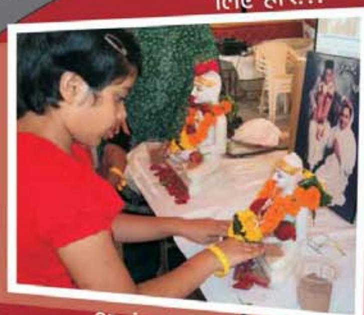

कलात्मक प्रवृत्तिओं में लीन हुए नन्हें चित्रकार...

आनंद में झूमते बच्चे...

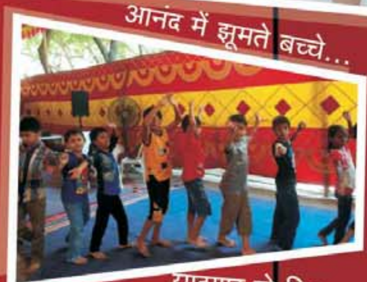

छोटे बच्चों द्वारा, डान्स परफॉर्मन्स...

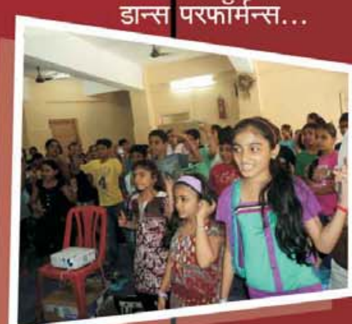

यादगार के लिए, बच्चों को कलरफुल रबड़बेन्ड की भेट...

बच्चों द्वारा ही.. सजाई गई आरती की थाली...

मुंबई किड्स केम्प की झलक

Akram Express
May 2013
Year : 1, Issue : 2
Conti. Issue No.:2

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 8th of every month

हा...हा..ही...ही...

पिन्टु : पापा में इतना बड़ा कब हो जाऊँगा कि मैं मम्मी को बिना बताए घर से बाहर जा सकूँ?
पापा : बेटा इतना बड़ा तो अभी तक मैं भी नहीं हुआ हूँ।

मम्मी : मेरा बेटा बहुत फास्ट इन्गलिश बोलता है।
आन्टी : बोल तो बेटा।
बेटा :इंगलिश इंगलिश इंगलिश इंगलिश इंगलिश।

एक बच्चा : क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो?
दूसरा बच्चा : अगर वह हिन्दी या इंगलिश में ट्रान्सलेट की है तो।

एक सरदार का रेडियो खराब हो गया, खोल के देखा तो अंदर चूहा मरा हुआ था।
देखकर सरदार बोलें : ये लो! चलेगा कैसे जब सिंगर ही मर गया...

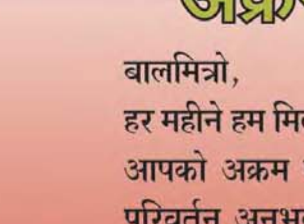

केप्टन ऑफ मिलिट्रि : नौजवानों, आगे बढ़ो...
(सेन्टा आगे नहीं बढ़ा)
केप्टन : तुम क्यों आगे नहीं बढें?
सेन्टा : आपने कहा ९ जवानों आगे बढ़ो और मैं तो १०वें नंबर पर था...

अक्रम एक्सप्रेस के पाठकों के लिए.....

बालमित्रो,

हर महीने हम मिलते तो हैं ही लेकिन मैं तुम्हें पूछना तो भूल ही जाता हूँ। तो चलो, आज पूछ ही लेता हूँ। मित्रो, आपको अक्रम एक्सप्रेस पढ़ना अच्छा लगता है? अक्रम एक्सप्रेस पढ़ने के बाद तुम्हारे जीवन में कैसा परिवर्तन अनुभव कर रहे हो? वह हमें ज़रूर बताना ताकि हमें सबसे अच्छा अक्रम एक्सप्रेस बनाने में प्रोत्साहन मिले। आपके अनुभव हमें नीचे दिए गए एड्रेस या इमेल आइडी पर ज़रूर से भेजना।

बालविज्ञान विभाग, त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
मु.पो.- अडालज, जि. - गांधीनगर - ३८२४२१,e-mail: akramexpress@dadabhagwan.org

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.